इस्लाम धर्म और हिंदू धर्म का अद्वैतवाद निराकार भगवान पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते है।

आपको बिना किसी रूप की चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना महामुश्किल इसलिए है कि

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

1.मन को रूप की सोचने की आदत है क्योंकि जो भी हम इस दुनिया में देखते हैं, उसका कुछ ना कुछ रूप है। रूप के बिना किसी के बारे में सोचना मुश्किल है।

2. प्यार, स्नेह आदि भावनाओंको निर्विकार भगवान से जोड़ने के लिए किसी भी तरीके का रूप, गुण आदि का माध्यम उपलब्ध नही है , जबकि मन को इस तरह की भावना बनाने की आदत है।

3. ईश्वर को याद करते समय साकार भगवान का रूपध्यान विभिन्न भावनाओं के के माध्यम से संभव है। निराकार भगवान से भावनाओं का कोई संबंध नही है।

इस स्थान पर सबको यह समझना चाहिए कि निर्विकार और साकार ईश्वर अलग-अलग भगवान नहीं हैं ।

यदि आप पानी देखते हैं, तो इसके तीन रूप बरफ, पानी, वाष्प हैं। इन तीनों के गुण अलग अलग है। इसी तरह भगवान एक है और इसके रूप है ब्रम्ह, परमात्मा और भगवान। लेकिन इनसे जुड़ी अनंत खुशी का रस वैलक्षण्य अलग अलग होता है।

भगवान केवल एक ही है। सर्वसमर्थ होने के नाते, भगवान आप के पसंद की कोई भी रूप धारण कर

सकते हैं।

जो रूप आपको पसंद हो उस रूप से आप भगवान का चिंतन कर सकते हो। जो ड्रेस चाहो उन्हे पहनवा सकते हो। भगवान से प्यार करने में कोई नियम, कायदा, कानून नही है। बस उनको अपना प्रियतम मानकर उनसे निष्काम प्रेम करना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132